

Sunday Avyakt Murli Revision Class
(निश्चय बुद्धि विजयी रत्नों की निशानियाँ)

AM 09-05-2021 (Rev. : 27.12.87)

By BK Dr Sachin Bhai Ji

Class Date : 09-05-2021

Venue- Meditation Hall, Pandav Bhavan

ओम शान्ति। एक गाय चरते-चरते बहुत दूर निकल आई, शाम ढलने को थी और अचानक उस गाय ने देखा कि एक बाघ दबे पांव से उसका पीछा कर रहा है, गाय घबराई और जहां उसको रास्ता मिले वहां वो गाय भागने लगी। वो बाघ भी उसके पीछे भागने लगा, तेजी से भागते-भागते उस गाय ने देखा सामने एक तालाब है और वो गाय उस तालाब में उतर गई, वो बाघ भी उसके पीछे-पीछे उस तालाब में उतर गया। परन्तु वो तालाब, तालाब जैसा था परन्तु कीचड़ था, पानी कम था और वो गाय उस कीचड़ के मध्य और वो बाघ भी उसके पीछे-पीछे, दोनों में कुछ अंतर, कुछ दूरी थी, परन्तु अब क्या? वो गाय तो धीरे-धीरे उस कीचड़ में धंसने लगी, वो शेर एकदम निकट था परन्तु गाय तक पहुंच नहीं पा रहा था क्योंकि वो भी फंस गया था और वो भी उस कीचड़ में धंसने लगा, धीरे-धीरे दोनों ही अंदर-अंदर जाने लगे। जैसे अब दोनों का ही अंतिम समय है, धंसती हुई गाय उस बाघ से बोली, क्या तुम्हारा कोई मालिक है? वो बाघ कहता है, मेरा, और मालिक! मैं तो खुद ही जंगल का मालिक हूं, मैं खुद ही जंगल का राजा हूं, मेरा कौन मालिक! वो गाय पूछती हैं, पर क्या ये सब बातें अब तुम्हारे काम आयेंगी, तुम तो अब मरने वाले हो। वो बाघ पूछता है, तुम भी तो मरने वाली हो। वो गाय कहती है, नहीं, मेरा मालिक है और जैसे ही वो देखेगा कि शाम हो गई है और मैं नहीं आई तो मुझे ढूंढते-ढूंढते यहां जरूर आयेगा और वाकई में थोड़ी देर बाद एक आदमी वहां आ जाता है। बड़ी मुश्किल से वो गाय को बाहर निकालता है, वो उसका मालिक है, दोनों- गाय और मालिक एक दूसरे की तरफ प्रसन्नता से देखते हैं। चाहते हुए भी शेर को नहीं निकाल पाते क्योंकि खतरा है, वो गाय बाहर निकल जाती है।

वो गाय प्रतीक है- आत्मा का, वो बाघ प्रतीक है- अहंकारी मन का, वो कीचड़ प्रतीक है -इस संसार का, वो लड़ाई प्रतीक है -अस्तित्व की, जो लड़ाई है, जो संघर्ष है उसका। इस संसार के कीचड़ में हम भी ऐसे ही फंसे हैं, गाय की तरह। परन्तु जिन्हें पता है हमारा मालिक आयेगा, जिन्हें विश्वास है, फेथ (faith) है, ट्रस्ट (trust) है, निश्चय है कि मेरा रक्षक वो है और एक मात्र वो ही मेरा हितैषी है इस संसार में, उसके अतिरिक्त मेरा संसार में और कोई नहीं। **ये निश्चय ही चेतना के भय को दूर करता है कि वो है, उसकी छत्रछाया है, उसका प्यार है।**

उसी तरह, किसी बगीचे में एक पिता और उसका बच्चा, उसका बेटा जाते हैं। खेल-खेल में बेटा एक बड़ा सा पत्थर है उसको धकेलने लगता है, बहुत कोशिश करता है, नहीं ढकेल पाता है। पिता पूछते हैं, क्या कर रहे हो? वो कहता है, धकेल रहा हूं। वो कहता है, पूरी ताकत क्यों नहीं लगाते? वो कहता है, पूरी ताकत ही तो लगा रहा हूं फिर भी हिलता तक नहीं। पिता कहते हैं, नहीं, तुम अपनी पूरी ताकत नहीं लगा रहे हो, तुमने मुझे तो कहा ही नहीं कि **मेरी ताकत भी तुम्हारी ही ताकत है। मेरी ताकत, मेरी ऊर्जा, मेरी इनर्जी (energy) भी तुम्हारी ही इनर्जी है, तुम मुझसे क्यों नहीं कहते।** वो पिता बैठा है, उसकी शक्तियां भी मेरी ही शक्तियां हैं। यदि सब कुछ करने के बाद भी जीवन का कोई विघ्न हटता नहीं, मिटता नहीं, कोई संस्कार, कोई माया, कोई बाधा, कोई विघ्न, सब-कुछ करने के बाद भी नहीं हट रहा है, उसका आह्वान करें **क्योंकि उसकी शक्तियां भी मेरी शक्तियां हैं।** ये विश्वास, ये निश्चय, ये फेथ, ये ईमान आत्मा को उड़ा देता है, बल भर देता है। तो आज की अव्यक्त वाणी, क्या कहा बाबा ने, निश्चय बुद्धि में? निश्चय, क्या निशानियां होंगी ऐसी आत्माओं की जिन्हें सम्पूर्ण निश्चय है? जिनका निश्चय किसी भी तूफान में डगमगाता नहीं, हिलता नहीं। **निश्चय हिलना अर्थात् जन्म-जन्म का क्या? प्रालब्ध हिलना।**

दिखाया है जीजस क्राइस्ट अपने शिष्यों के साथ गलीली की झील है, नाव में बैठा है, सोया पड़ा है, सारे शिष्य जागे हुए हैं, नाव जा रही है। अचानक तूफान आता है, सारे शिष्य हिल जाते हैं, घबरा जाते हैं क्योंकि पानी अब नाव के अंदर आने लगा है और उनका जो मालिक है वो तो सोया पड़ा है। बहुत घबराते हैं, बहुत घबराते हैं, मालिक, मालिक, ओ मास्टर, ओ मास्टर, रबाय, जागो-जागो, देखो, क्या हो रहा है? हम सब मर रहे हैं, नाव तो डूब रही है, उठो। दिखाया है, जीजस क्राइस्ट उठता है, हाथ करता है, पीस, बी स्टिल (Peace, Be still), शांत और तूफान उसकी आज्ञा का पालन करता है, शांत हो जाता है। बाइबिल में वाक्य है, जीजस क्राइस्ट अपने शिष्यों से कहता है, ओ इ आफ लिटल फेथ (O ye of little faith), हे कम ईमान वालों, क्या इतना भी विश्वास नहीं कि जिस नाव में मैं बैठा हूं, क्या वो नाव डूबेगी? क्या तुम्हें पता नहीं कि मैं कौन हूं? जिस नाव पर तुम सवार हो उसका खिचैया मैं हूं, वो नाव डूब

नहीं सकती। ऐसा ईमान, ट्रस्ट, फेथ, विश्वास, निश्चय भगवान पर, मन ही मन इस बात को स्वीकार कर लेना कि मेरा इस संसार में उससे बड़ा कोई हितैषी नहीं, मेरा उससे बड़ा कोई दोस्त नहीं, मेरा उससे बड़ा कोई शुभचिंतक नहीं।

तो आज की मुरली में क्या कहा बाबा ने? पहले आप बतायेंगे, क्या कहा? निश्चयबुद्धि आत्मायें कैसी होती हैं? साइलेंस में रहने वाली और कैसी होती हैं? निर्माण, नशे में रहती हैं, विजयी और सर्वश त्यागी, समर्पित, बेफिक्र बादशाह, थोड़ा ज्यादा ही बेफिक्र कभी-कभी और निश्चिन्त, निश्चित और दूसरों को नशे में लाने वाली और क्या निशानियां हैं उनकी? तूफान की परख, तूफान में चेकिंग करने वाले, और क्या निशानियां हैं? ज्ञान, गुण, शक्तियों में सम्पन्न, समीप रत्न और संतुष्टता, उदारता, सर्व के कल्याण की भाषा बोलने वाली, जानने वाली, समझने वाली और क्या था? **ज्ञान की प्याइंट्स को याद करना एक विधि है - मन को एकाग्र करने की।** पहले मुरली सुन लेना, मुरली पढ़ लेना और फिर एकांत में बैठकर याद करना, क्या-क्या था? अपने आप मन एकाग्र हो जाता है और **एकाग्र मन बहुत शक्तिशाली होता है**, कंसंट्रेटेड माइंड (concentrated mind) में पावर होती है, अचानक से नये संकल्प उत्पन्न होते हैं, अचानक से नई समझ, नई अंडरस्टैंडिंग आ जाती है। जिस चीज के बारे में हम लंबे समय से सोच रहे हैं, समझ नहीं आ रही है, उसका वर्तमान मुरली से कोई संबंध नहीं है, परन्तु इस **मुरली के अध्ययन से जो एकाग्रता प्राप्त हुई वो ही एकाग्रता की शक्ति जीवन की किसी और परिस्थिति का हल प्राप्त करा देगी, एकाग्रता में वो शक्ति है, वो पावर है।** इसलिए पढ़ा बहुत है, सुना बहुत है, अब क्या करना है? पिछले संडे क्या कहा था? चिंतन, मनन और मग्न हो जाओ। वर्णन तो बहुत किया, आज भी कहा, भाषण कर सकते हैं, अगर किसी को पूछा जाये निश्चयबुद्धि हैं, बहुत अच्छा भाषण हो सकता है। परन्तु एकाग्र हो जाना, मन को स्थिर कर देना, बाकी सब विचार अपने आप विलीन हो जायें। सहज एकाग्रता लाने की विधि हैं, जो मुरली सुनी हैं ऊपर से नीचे तक उसे याद करना, क्या-क्या था? जितना याद आता है वो करते-करते ही मन एकाग्रता के शिखर तक पहुंच जाता है। तो आज की मुरली में क्या सुनाया बाबा ने? जो बच्चे निश्चय वाले हैं, सम्पूर्ण फेथ, ट्रस्ट, निश्चय है जिनको, उनकी क्या निशानी होगी? जैसे वो गाय, कितना उसे निश्चय था, घंस रही है, कीचड़ में गले तक आ गई है, फिर भी पता है मेरा मालिक आयेगा, ये निश्चय। तो इस मुरली से निश्चय बुद्धि आत्माओं की ऐसी 12 बातें देखेंगे ।

1. नशा - पहली निशानी नशा। कर्म में, वाणी में, चेहरे में रुहानी नशा का अनुभव। तो निश्चय है तो नशा दिखेगा और वो नशा वाणी से झलकेगा, कर्म में आयेगा, वो नशा चेहरे से दिखाई देगा, ये पहली निशानी।

2. विजय - दूसरी निशानी? दूसरी क्या निशानी? विजय, जिन्हें निश्चय हैं उनके लिए विजय सहज है, विजय प्रत्यक्ष फल है। विजय क्या है? सक्सेस क्या है? विकट्री (victory) क्या है? प्रत्यक्षफल, सहज प्राप्त होती है, कुछ भी करो, कुछ भी, किसी भी क्षेत्र में, किसी भी डिपार्टमेंट में, किसी भी सेवा में मन को लगाओ, वहां स्वतः ही विजयी होगी। क्योंकि लॉ ऑफ फेथ (Law of Faith) काम कर रहा है, लॉ ऑफ फेथ। प्रकृति के ढेर सारे नियम हैं, उसमें से एक नियम है लॉ ऑफ फेथ, विश्वास का नियम, लॉ ऑफ अट्रैक्शन (Law of Attraction), लॉ ऑफ रेजोनेंस (Law of Resonance), लॉ ऑफ वाइटल एडजस्टमेंट (Law of Vital Adjustment), लॉ ऑफ बिलीफ (Law of Belief), ऐसे ढेर सारे नियम हैं। वो नियम हमेशा वैसे ही काम करते हैं जैसे सदियों पहले करते थे, आज भी उसी निश्चय से, उसी विश्वास से, उन नियमों का पालन किया जाए तो परिणाम वही होगा जो कभी किसी अन्य कालखण्ड में था। तो लॉ ऑफ फेथ कहता है, जहां फेथ होगा वहां विजय होगी, जहां निश्चय होगा वहां विजय होगी, बस, निश्चय कितना है उस पर है। हमने देखा है, कोई-कोई मरीज इतने सीरियस होते, इतने सीरियस होते, पर उन्हें इतना निश्चय होता है कि मुझे कुछ नहीं होगा, मैं ठीक हो जाऊंगा, वो जल्दी ठीक होते हैं। ढेर सारी बीमारियों से गुजर कर भी, अभी-अभी वेंटिलेटर, अभी-अभी डायलिसिस, अभी-अभी ये, अभी-अभी वो, इतनी सारी चीजें हुई हैं, निकलकर बाहर आ जाते हैं। कुछ दिनों पहले ही एक मरीज आया ओ.पी.डी. में, दर्द हो रहा है छाती में, हमने कहा ई.सी.जी. करके आओ। ई.सी.जी. किया और ओ.पी.डी. के बाहर ही गिर गया, कोलेप्स (collapse)। आई.सी.यू. लेकर गये, स्ट्रेट लाईन, कुछ भी नहीं, जीरो। हॉर्ट बंद हो चुका था, एक-डेढ़ घंटा तक सब कुछ चला वेंटिलेटर, ये, वो और रिदम (rhythm) आ गया, फिर ई.सी.जी. लिया, हार्ट अटैक। फिर उसका ट्रीटमेंट चला और धीरे-धीरे वेंटिलेटर से बाहर आ गया, कल उसकी एंजियोग्राफी (angiography) हुई, वो भी नार्मल। जिनमें बहुत निश्चय होता है, फेथ होता है, जीने की इच्छा होती है, उन्हें कुछ भी नहीं होता है। **इम्यूनिटी का संबंध इमोशनस से है, जिन्होंने पहले ही स्वीकार कर लिया, मैं बीमार हूं, जिनके मन में भय बैठ गया है, वो फटाफट संक्रमित होते हैं।** निश्चय, तो पहली निशानी - नशा, दूसरी निशानी - विजय।

3. नो डाउट (No Doubt) - तीसरी निशानी नो डाउट, एक परसेंट भी डाउट नहीं, संशय ही नहीं है, इतना फेथ है अंदर। क्या ऐसा हमारा निश्चय है उस पर? जीवन में कुछ भी हो जाए, वो मुझे छोड़ेगा नहीं। मैं कितनी भी अंधकारमय जीवन की परिस्थिति में चला जाऊं, परन्तु फिर भी वो मुझे निकालकर बाहर लायेगा, ऐसा निश्चय। एक परसेन्ट भी डाउट नहीं और जिनका डाउट होता है वो पूछते

रहते हैं, जिनको डाउट है ही नहीं उन्हें किसी को कुछ भी पूछने की आवश्यकता नहीं। मधुबन निवासी बन जाये क्या? पूछते रहते हैं, वहां चले जाएं क्या? अर्थात् डाउट है। जिसे डाउट ही नहीं उसे किसी को कुछ भी पूछने की आवश्यकता नहीं। तो तीसरी निशानी - नो डाउट।

4. नो क्वेश्चन (No Question) - कोई प्रश्न ही नहीं है, फुल स्टॉप, बिंदी, कोई प्रश्न नहीं है। ऐसा क्यों? वैसा क्यों? ये क्यों? वो क्यों? ये ऐसा क्यों करते हैं? ये वैसा क्यों करते हैं? मेरे साथ ही ऐसा क्यों हो रहा है? ऐसा हमेशा ही क्यों होता है? प्रश्न आयेंगे, ऐसा नहीं कि बिल्कुल भी प्रश्न नहीं है, परन्तु दिन भर के सारे प्रश्न अचानक नुमाशाम के योग में विलीन हो जाते हैं। उससे भी अच्छी स्थिति है कि प्रश्न ही न आये, परन्तु प्रश्न फिर भी आते हैं क्योंकि हर दिन नई-नई परिस्थितियां हैं, हर दिन नई-नई समस्याएँ हैं, हर दिन नये-नये व्यक्तियों से संपर्क हैं, हर दिन व्यक्तियों का स्वभाव-संस्कार बदल रहा है। जो अब तक जिस तरीके से बात करता था, अभी एकदम बदल गया। चाणक्य ने कहा है, यदि कोई व्यक्ति का बिहेवियर (behaviour) अचानक बदल जाये तो समझ लेना दाल में कुछ काला है। अभी तक सब-कुछ ठीक था, अचानक बदल गया किसी का व्यवहार, कुछ तो है। तो ये सब तो होता रहेगा, खेल है, अनित्य खेल है। ये चार निशानियां हैं - नशा, विजय, नो डाउट, नो क्वेश्चन।

5. बेफिकर बादशाह - पाँचवी निशानी, बेफिकर बादशाह। जैसे, कितना अच्छा उदाहरण दिया है, संसार में परिस्थिति आती है, दुःख आता है, सुख आता है, चीत्कार उठती है दुःख की, सारा संसार कितना दुःखी है। स्वजन, अब तक जिसके साथ बात करते थे, खेलते थे, सब कुछ करते थे, आज वो है ही नहीं, गया। दुःख की अनुभूति होती है, व्यक्ति कह भी नहीं पाता कि मैं दुःखी हूँ, चुप, सदमा इतना गहरा है। कई सारे हॉस्पिटल्स है इस समय भारत में जहां आने वाले, कल एक डॉक्टर बता रहे थे उधर कर्नाटक में, गुलबर्गा, हर दो पेशेन्ट के बाद एक पेशेन्ट जो आ रहा है, ब्रोट डेड (brought dead), जा चुका है। तो संसार, दुःख होता है, गहरा दुःख, सहन नहीं कर पाती हैं, चुप हो जाती है चेतना, नम हो जाती है, तो बाबा ने कहा जब ऐसा दुःख होता है तो व्यक्ति बोलता भी नहीं कि मैं दुःखी हूँ। वो स्वतः ही स्थिति हो जाती है, परिस्थिति अनुसार स्थिति। तुम्हारी बेफिकर बादशाह की स्थिति कैसी है? किस पर आधारित है? परिस्थितियों पर नहीं, परन्तु किसी और बात पर, कौन सी बात पर? ज्ञान पर, ज्ञान की लाइट-माइट पर, योग की शक्तियों पर, बाप द्वारा जो वर्सा मिला है उस पर, सदगुरु द्वारा जो वरदान मिला है उस पर, भाग्यविधाता द्वारा जो भाग्य मिला है उस पर। इस पर तुम्हारी स्थिति आधारित है, और स्थिति क्या है? बेफिकर बादशाह, निश्चिन्त स्थिति, कोई फिक्र नहीं। बाहर की परिस्थितियों अनुसार स्थिति नहीं है, परिस्थितियां शक्तिशाली, हम कमजोर, ये नहीं। परिस्थितियां हिला रही हैं, हम भी हिल रहे हैं, ये नहीं।

हमारी स्थिति का आधार बाहर की कोई भी चीजें नहीं है इसलिए धीरे-धीरे सारे आधार कम करते जाने हैं। **जितनी हमारी आवश्यकतायें कम होंगी, उतने हम अधिक शक्तिशाली होंगे। द लेसर द वान्ट्स, द पावरफुल वी आर (the lesser the wants, the powerful we are).** जितनी आवश्यकताएं कम उतने हम अधिक शक्तिशाली, जितनी आवश्यकताओं का विस्तार है, ये भी चाहिए, वो भी चाहिए, उतनी कम शक्ति। बेफिक्र बादशाह, परन्तु इसका मतलब ये भी नहीं, क्या? केयरलेस (careless) वाला नहीं।

जैसे किसी ने अभी-अभी भेजा-

बुखार का **पहला दिन**, ये बुखार है, ठीक हो जायेगा, मुझे कोविड तो हो ही नहीं सकता क्योंकि यह बीमारी ही नहीं होती कुछ, ये षडयंत्र है।

बुखार का **दूसरा दिन**, हर बुखार कोविड थोड़े ही होता है, लेकिन फिर भी पैरासिटामाल (Paracetamol) खा लेता हूं।

बुखार का **तीसरा दिन**, आर.टी.पी.सी.आर. (RT PCR) कोविड टेस्ट करवाने से क्या होगा, सीधा सिटी स्कैन करा लेता हूं, सिर्फ दो-तीन दिन में सिटी स्कैन में कुछ खास नहीं आया तो कहेगा कि कोरोना नहीं है।

बुखार का **चौथा दिन**, ये बुखार तो पीछे ही पड़ गया है, चलो, ब्लड टेस्ट करवा लेते हैं, डॉक्टर को पैसे क्यों देना हैं, ये तो बैठे ही है लूटने के लिए, टेस्ट में शायद टाइफाइड पॉजिटिव आयेगा।

बुखार का **पांचवा दिन**, मैंने पहले ही कहा था, ये टाइफाइड है, अब डॉक्टर को तीन सौ रुपए क्या देना, कुछ एंटीबायोटिक खरीद कर खा लेता हूं।

बुखार का **छठवां दिन**, अभी कल ही तो एंटीबायोटिक शुरू किया, थोड़ा समय तो लगेगा।

बुखार का **सातवां दिन**, ये बुखार तो पीछे ही पड़ गया है, एक फ्रेंड डॉक्टर है, उससे पूछते हैं। कुछ देर बाद, ये डॉक्टर सबका लेब में कमीशन होता है, देखो, आर.टी.पी.सी.आर. कोविड टेस्ट के लिए बोल रहा है, उसकी रिपोर्ट में भी दो तीन दिन लगेगे।

बुखार का **आठवां दिन**, अरे मुझे सांस लेने में दिक्कत हो रही है, कोई अस्पताल ले चलो, लेकिन कोविड रिपोर्ट आया नहीं है।

बुखार का **नौवां दिन**, ऑक्सीजन लेवल 90 से नीचे जा रहा है लेकिन कहीं बेड नहीं मिल रहा है, ये सरकार एकदम ही बेकार है।

बुखार का **दसवां दिन**, ऑक्सीजन लेवल 80 प्रतिशत से नीचे हैं, बहुत मुश्किल से एक बेड मिला है, लेकिन राहत नहीं है, ये अस्पताल एकदम ही बेकार है।

बुखार का ग्यारहवाँ दिन, वेंटिलेटर पर गये, अब परिवार वाले डॉक्टरों को दोष दे रहे हैं। बुखार का बारहवाँ दिन, संक्रमण इतना बढ़ गया है कि मरीज की मौत हो गई, बाकी के लोग डॉक्टरों से लड़ रहे हैं, आप लोगों को कुछ नहीं आता है, दो हफ्ते पहले स्वस्थ था, आदमी की जान ले ली, अस्पताल में स्थिति अच्छी नहीं है, बेड के लिए इतनी मारामारी, वहां भी लापरवाही हो रही है।

बेफिक्र बादशाह, ऐसा बेफिक्र बादशाह नहीं बनना है, सतर्क, सजग। **इम्यूनिटी बढ़ाने का सबसे अच्छा साधन पता है, कौन सा है? ब्रह्मचर्य, ब्रह्मचारी सबसे पावरफुल योगी जो है उनके शरीर में एक अद्भुत सी ऊर्जा प्रकट होती है ब्रह्मचर्य की, उससे बड़ी और कोई भी इम्यूनिटी इस संसार में नहीं है। वो ब्रह्मचर्य नष्ट होना अर्थात् शरीर से प्राण ऊर्जा बाहर निकलना। जहां शरीर में प्राण ऊर्जा दौड़ रही है वहां ब्रह्मचर्य का तेज है।** वो शरीर से बाहर निकलती है, चाहे किसी भी कारण से, किसी भी उत्तेजना से या कल्पना से तो प्राण ऊर्जा का ह्रास होता है और इम्यूनिटी कम होती है। **इसीलिए तो इतनी मुरलियां हैं प्यूरिटी पर, प्यूरिटी ही इम्यूनिटी है।** पांचवा, बेफिक्र बादशाह।

6. बलिहार - छठवां, बलिहार। छठवां, सर्वश त्यागी। किन चीजों का त्याग? किन चीजों में समर्पित? अंश भी न हो, किसका अंश? विकार का अंश जो देह भान को जन्म देता है, देह के पदार्थ, देह के संबंध, तीन, ये तीनों ही अगर अंश किसी भी रूप से मन में बसे हैं, तो क्या होगा इससे? वंश का जन्म होगा। सूक्ष्म, अति सूक्ष्म विकार मन में यदि हैं, जैसे ही एकांत में या जीवन की परिस्थितियों में उसे चिंगारी मिलेगी, वो भड़क जायेगा, बाहर निकल के आयेगा। जो ऊपर से कुछ भी दिखाई नहीं देता, इतना सूक्ष्म है, इतना सूक्ष्म है कि जीवन में कुछ परिस्थितियों में ही वो बाहर आता है, और वो परिस्थितियां अभी है ही नहीं, पर वो परिस्थितियां कभी भी आ सकती है और जब वो बाहर आता है बाकी ज्ञान और योग, सब कुछ नष्ट हो जाता है। लॉजिक, तर्क, बुद्धि, विवेक, ज्ञान, योग, सब बह जाता है क्योंकि उसमें इतनी ज्यादा पावर है। **इसीलिए ढूंढो, खोज करो, मन में, अपने ही अंदर, मेरे अंदर ऐसी वो कौन सी बात है, कौन सा वो सबसे गहरा भय बैठा है? स्वजनों की मृत्यु का, स्वयं की मृत्यु का, कौन सा भय? बीमारी का, कौन सा भय है? या कोई संस्कार, या कोई विकार। जिसको जिस चीज में तकलीफ है, उसको उसके ऊपर ज्यादा काम करना है, बाकी चीजों में काम करने की आवश्यकता कम है।** अमृतवेला हो ही रहा है, मुरली चिंतन कर ही रहे हैं, पर विकार का वो अंश जो बीच-बीच में है उसको निकालना है, उस पर एक्स्ट्रा काम करना है, एक्स्ट्रा टाइम देकर। तो छठवां बलिहार, समर्पण। समर्पण अर्थात् ये नहीं कि मधुबन या केंद्र में आ जाओ। समर्पण स्थिति का नाम है, निरंतर की जो स्थिति

है उसका नाम है, वो सारी भी सीढियां है, मंजिल तो ये है सर्वश त्याग। पदार्थ शरीर का कोई आकर्षित न करे, कुछ भी इस संसार का, कोई भी पदार्थ, कोई भी संबंध। लौकिक तो छोड़ दिया, पर अलौकिक में नये-नये संबंध बनाकर रखे हैं, किसी को दोस्त ही बना लिया, उसके सिवाय होता नहीं, वो ही चाहिए खाने के लिए, घूमने के लिए, बनाने के लिए, कुछ भी करने के लिए, वो भी बाधा है। तो छठवां बलिहार, समर्पण।

7. निश्चय, निश्चित, निश्चित - निश्चित अर्थात् फिक्स्ड है, जो कुछ हो रहा है निश्चित है, ड्रामा का राज। निश्चित अर्थात् केयर फ्री (carefree), हम निश्चित है, वो बैठा है ऊपर, वो देखेगा क्या करना है, क्या नहीं करना है। अंदर ही अंदर समर्पण, बार-बार समर्पण, समर्पण एक ड्रिल है, एक अभ्यास है, एक प्रैक्टिस है, एक एक्सरसाइज है, जो बीच-बीच में समर्पण कर देना। गीता में लिखा है, मेरी ये जो माया है अर्जुन, बहुत दुस्तर है, बहुत कठिन है, सतो, रजो, तमो से जो बनी है। इसको तुम वैसे नहीं पार कर पाओगे, तुम्हें मेरी शरण में आना पड़ेगा, तो ही हो सकता है नहीं तो नहीं। तुम्हारे पास कितनी भी टेकनिक्स होंगी, वो काम नहीं आयेंगी, तुमको यहां ही आना पड़ेगा। तो बलिहार, समर्पण और निश्चित, निश्चित और निश्चय ये तीन बातें।

8. स्वयं भी नशे में होगा तो दूसरों को भी नशा दिलायेगा - जो स्वयं ही नशे में नहीं है, स्वयं ही उदास है, दुःखी है, उसको देखकर क्या लगता है? उदासी भी कॉन्टेजियस (contagious) है, संक्रामक है। एक व्यक्ति अगर उदास रहा तो उसको देखकर दूसरों को भी उदासी छा जाती है। वो कहता है, मेरे साथ ऐसा हो गया, वैसा हो गया, उसको लगता है अब मेरे साथ भी ऐसा ही होगा। दुःख संक्रामक है, जैसे खुशी संक्रामक है वैसे दुःख भी फैलता है, इसलिए बाबा ने कहा, स्वयं नशे में हैं और दूसरों को भी याद का नशा दिलायेगा और नशे में आने की सर्वोच्च विधि है ज्ञान चिंतन। जरूरी नहीं है कि पूरी की पूरी मुरली पर चिंतन किया जाए, पर कुछ एक शब्द वहां से निकाल लिया जाए और हर दिन बड़ी गहराई से उस पर चिंतन किया जाए। जैसे कहा, चिंतन करते-करते मन एकाग्र हो जाता है और एकाग्र होते ही कोई न कोई जीवन के दूसरे प्रश्न का उत्तर वहां मिल जाता है क्योंकि एकाग्र मन में बहुत पावर होती है। इसलिए अमृतवेला का समय केवल उठकर योग करने का नहीं है, ज्ञान चिंतन का भी है **क्योंकि जितनी एकाग्रता अमृतवेला है, दिन भर नहीं है, जितना स्ट्रांग वायब्रेशन अमृतवेला है।** सीधा उठे और सीधा बाबा के कमरे में और योग किया, खत्म और बाकी दिनचर्या चालू, ज्ञान चिंतन कहां किया? इसके लिए टाइम बढ़ाना पड़ेगा, योग तो जैसा चल रहा है 4 बजे, वो तो है ही। उसके पहले कुछ ज्ञान का चिंतन ताकि मन एक्टिवेट हो जाये, **किसी भी प्वाइंट, वो प्वाइंट रात में सोते समय सोच कर रख लेना, उठते**

ही इस पर चिंतन करना है। चाहे बैठकर करो, चलते-फिरते करो, घूमते हुए करो, फिर योग चालू क्योंकि **बिना चिंतन के नशा नहीं चढ़ता।** आज कहा ना, क्लासेज सुन सुनकर भी क्या हो गये? थक गये, बीर हो गये हैं, वो ही वो ही चीजें, बाप को याद करो, बाप समान बनी, दिव्य गुण धारण करो, काम महाशत्रु है, सेवा तुमको बहुत करनी है, मौत सामने खड़ा है, अब घर जाना है। कुछ भी असर ही नहीं है इन शब्दों का, इतनी बार सुने हैं, ज्ञान तो वही रहेगा परन्तु देखने का दृष्टिकोण बदल जाये, तो अपने आप कुछ तो नया होगा। तो आठवीं, खुद नशा और दूसरा को भी नशा चढाने वाले।

9. निमित्त, निर्मान, निर्माण - निमित्त। जो समझता है मैं निमित्त हूं, वो कैसा होगा? निर्मान, उसे मान की कामना नहीं। और जिसे मान की कामना नहीं वो क्या करेगा? निर्माण अर्थात कंस्ट्रक्शन, कुछ तो क्रियेटिव करेगा। निर्मान अर्थात विनम्र और निर्माण अर्थात कंस्ट्रक्शन, कुछ तो निर्माण करेगा वो। तो जो निश्चयबुद्धि होगा उसे अभिमान नहीं होगा, वो मौन होगा, ये है नौवीं निशानी।

10. भाषा - कौन सी भाषा होगी? मीठा तो होगा ही, परन्तु भाषा कौन सी होगी? संतुष्टता की, उदारता की, हरेक के कल्याण की भाषा, पहले आप, दूसरों को सिखाना है। अगर हमें कोई स्किल, कोई आर्ट आता है तो अपनी आर्ट को अपने तक ही नहीं रखना है, कई लोग अपनी स्किल अपने तक ही रखते हैं, क्यों? डर। अगर दूसरे ने सीख लिया तो ये मेरे से आगे निकल जायेगा, फिर हमारी वैल्यू कम हो जायेगी, लोग हमको कम पूछेंगे और हो सकता है जिसको सिखाओ वो मेरे से भी आगे चला जाये तो! फिर खतरा है ना, उदाहरण दिया ब्रह्मा का। क्या किया बाबा ने? मम्मा को आगे रखा, बच्चों को आगे रखा। तुम्हें भी अपने से आगे दूसरों को बढ़ाना, ये बहुत-बहुत हाई स्टेज है, बहुत ऊंची भावना है, कितना निस्वार्थ भाव है इसमें, दे देना। दिखाया है कहानी में, अर्जुन कृष्ण से पूछता है कि मैं भी तो बहुत बड़ा दानी हूं, लोग ये कर्ण को ही दानी क्यों मानते हैं? ऐसी मुझमें क्या कमी है? मैं भी बहुत कुछ बांटता हूं लोगों को। कृष्ण कहते, चलो देखते हैं, दो पहाड़ियां हैं, कृष्ण उनको सोने की पहाड़ी में तब्दील कर देते हैं और कहते हैं जाओ ये जितना सोना है ये गांव वालों को बांट दो। अर्जुन भाग-भाग कर जाता है और दो दिन, दो रात बिना सोये, सोना बांटते जाता है परन्तु वो कम नहीं होता है, फिर कहता है, मैं थक गया, बस हो गया। कृष्ण कहते हैं, ठीक है, बैठो, कर्ण को बुलाता है और बीच में अर्जुन को थोड़ा अभिमान भी आता है क्योंकि जय जयकार होती है, लोग महिमा गाते हैं, अहा! कितना दानी है! कर्ण को बुलाता है, कर्ण को भी वो ही काम, सोना बांट दो, गांव वालो को। कर्ण जाता है, गांव वालों से कहता है, जिसको जो चाहिए ले लो और निकल जाता है, झंझट खत्म। न तो जय जयकार सुननी है, न मेरे पीठ पीछे लोग मेरे बारे में क्या कहते हैं उसमें रुचि है, जिसको जो चाहिए वो ले ले, ये है निःस्वार्थ भाव। ऐसा दान, उदारता,

उदारचरितानां तु। तो निश्चयबुद्धि अर्थात् उदार, जमा करके नहीं रखना चीजों को, बांट देना। आम मिले हैं, सड़ रहे हैं, न खुद खा रहे हैं, न दूसरों को दे रहे हैं। फल मिले हैं, रखे हैं, सोच रहे हैं कल खाऊंगा, कल खाऊंगा, कल खाऊंगा और जब आया तो देखा सब गये। ये काम बहुत अच्छा है, कमरे में ढूँढो, क्या है एकस्ट्रा? घर में ढूँढो अपने और जिसको जरूरत है उसको दे दो, कल्याण होगा।

एक बच्चा निकल पड़ता है, हरेक दुकान में जाता है, कहता है, यहां भगवान मिलते हैं क्या? वो कहता है, भगवान! भाग यहां से। किसी और दुकान में जाता है, भगवान मिलते हैं? कोई ये भी पूछता है, कितने पैसे हैं? कहता है, एक रुपया। भाग यहां से! इतने दुकान घूमता है, इतने दुकान घूमता है, चालीस दुकान हो जाते हैं। एक बूढ़े दुकानदार के पास पहुंचता है, वो पूछता है तुमको भगवान क्यों चाहिए? क्यों खरीदना है? वो कहता है, मेरी मां अस्पताल में है, डॉक्टर ने कहा है कि अब इसको केवल भगवान ही बचा सकता है, इसलिए ढूँढ रहा हूं, आपके पास है? तो कहता है, हां, कितने पैसे है तुम्हारे पास? वो कहता है, एक रुपया। दे दो, वो कहता है, मैं भगवान को पहुंचा दूंगा, जाओ तुम। उधर उसकी मां का ऑपरेशन होता है, सब कुछ होता है, वो ठीक होती है और लास्ट में हॉस्पिटल का बिल डेढ़ लाख। तो अचानक पता चलता है, किसी एक बूढ़े व्यक्ति ने वो बिल चुकतू कर दिया है और वहां पर एक लेटर छोड़ा हुआ है, और उसमें लिखा है कि तुम्हारा ये जो बेटा है न उसका निश्चय था, यदि उसे भगवान मिल गया तो तुम बच जाओगी। मैं तो एक मात्र जरिया हूं, तुमको उसी ने बचाया है।

आज मदर्स डे है। बेटा लेट घर आता है बारिश में, पिताजी डांटते हैं, पहले निकलना था ना, आने की क्या जरूरत थी? बहन कहती है, छाता नहीं ले जा सकते थे? दादाजी कहते हैं, बारिश रुक जानी चाहिए थी फिर आना चाहिए था। मां कहती है, ये बारिश कितनी मूर्ख है, उसको इतना भी नहीं समझ आता मेरा बेटा आ रहा है, उसको रुकना तो चाहिए ना, इसे कहते हैं मां। वो क्या सोचती है? दोष किसको देती है? बारिश को, बारिश को ही समझ में नहीं आता है, उसको रुकना चाहिए था। और बाकी लोग! तो इसलिए मां बहुत ऊंची अवस्था है और उससे भी ऊंची अवस्था है मातृत्व, मदरहुड (motherhood), **मां तो कोई भी बन सकता है, मदरहुड को पा लेना**। इसका मां बनने से कोई संबंध नहीं है, शरीर से शरीर को जन्म देना कोई बड़ी बात नहीं है परन्तु मातृत्व को प्राप्त कर लेना। जैसे मम्मा, वो ऊंची अवस्था है, उसका स्त्री-पुरुष होने से भी कोई संबंध नहीं। ब्रह्मा मां है, मां अर्थात् पालना। तो कहां थे हम? दसवीं निशानी क्या है? भाषा।

11. तूफान की परख - त्रिनेत्री बनकर तूफान को परखो। उस समय, जैसे वो तूफान है वायु का, समुद्र का, वैसे यहां भी तूफान आते हैं, कौन-कौन से? ब्राह्मण जीवन के तूफान कौन-कौन से हैं? व्यर्थ संकल्प, नाम-मान और हम चाहते हैं कुछ पर वो हो नहीं रहा है, इच्छा अनुसार नहीं हो रहा है। हम चाहते हैं ये ऐसा होना चाहिए पर वैसा नहीं हो रहा है, हम चाहते हैं इसको ऐसा बिहेव करना चाहिए, इस डिपार्टमेंट में ऐसा नहीं वैसा होना चाहिए, यह टाइमिंग चेंज हो जाना चाहिए, बहुत कोशिशों की हमने, पर वो होता नहीं है। इसको बदलना है, उसको बदलना है, बदलता कुछ नहीं है, दुःखी हो रहे हैं, यहीं तूफान है, यही निश्चय की परीक्षा है। बाबा ने कहा, यही पेपर है, इस पेपर में क्या चाहिए तुमको? सर्टिफिकेट-लोक पसंद, बाप पसंद, मनपसंद। कोई कहे कि पेपर दे ही न और पास विद ऑनर का सर्टिफिकेट कैसे मिलेगा? तो तूफान आयेंगे, ढेर सारे तूफान आयेंगे। ब्राह्मण बनना अर्थात् ही बस, तूफान चालू, जब तक ब्राह्मण नहीं थे शांति से जीवन चल रहा था। ब्राह्मण बन गये, मुसीबतों का युग चालू, संगमयुग अर्थात्? तो एक के बाद एक, परन्तु वो खेल लगे, वो हमें डिस्टर्ब न करें। मैं समर्थ आत्मा हूं, फिर व्यर्थ कैसे आ सकता है? व्यर्थ की जीत कैसे हो सकती है? समर्थ बाप की समर्थ संतान हूं। स्वमान केवल ये नहीं है, आत्मा हूं। निश्चय कौन सा? मैं समर्थ आत्मा हूं, इसको सबकॉन्शियस माइंड में जाने देना है, अभी तक गया नहीं है, ऊपर-ऊपर है। बहुत टाइम लगता है कोई भी बात अंतर्मन स्वीकार कर ले, इतना जल्दी नहीं स्वीकार करता है। हम उसको स्वमान देते हैं, मैं महान आत्मा हूं, वो क्या करता है? एक किक (kick) मारता है, दूर फेंक देता है, मैं और महान! ऊपर से तो कहता हूं, लिखता भी हूं, पर अंदर से मुझे पता है, मैं नहीं हूं, बिल्कुल नहीं हूं। क्योंकि इतनी सारी गलतियां कर रखी है, ब्राह्मण बनने के बाद भूलें बहुत सारी हुई है, किसी को बता नहीं सकते ऐसी भूलें, और कैसे कहूं महान आत्मा हूं! इतना रिस्पांसिबल हूं, परन्तु भूलें तो हो रही हैं, इतना अच्छा सब कुछ है परन्तु कुछ-कुछ ऐसी गंदी, नेस्टी हैबिट्स (nasty habits) अंदर में है, क्या करें? किसको बतायें? बता भी नहीं सकते। और स्वमान है मैं महान आत्मा हूं! **अंतर्मन को स्वीकार करा लेना, पुरुषार्थ है, बहुत एकांत चाहिए, बहुत मौन चाहिए, बहुत चिंतन चाहिए, तो वो अंदर जायेगा, नहीं तो नहीं जाता है।** तो ग्यारहवां, तूफान।

12. समीप रत्न - क्या निशानी बताई समीप रत्न की? डबल विदेशियों से मुलाकात- निश्चयबुद्धि अर्थात् जो समीप है, समीप है अर्थात् सहज स्वतः, मेहनत नहीं, मेहनत बहुत कर ली। क्या-क्या मेहनत की? भक्ति की मेहनत की, ढूंढने की मेहनत की, नौकरी की मेहनत की, सब मेहनत ही मेहनत, मेहनत ही मेहनत। अब मेहनत से मुक्त हो जाओ, बाप मुक्ति दिलाने आये हैं। हर चीज से स्वयं को मुक्त करना है और जो पुरुषार्थ, जो चीज बिना मेहनत के सहज होती है वही लंबा समय चलती है। जो जबरदस्ती कर

रहे हैं, वो लंबा समय नहीं चलेगी। **अब सहज बनाना है कोई चीज को, तो उस पर अलग से काम करना पड़ेगा, रोज उस विषय में पढ़ना पड़ेगा, चिंतन करना पड़ेगा, डिस्कस करना पड़ेगा, जब तक वो सहज न हो जाये तब तक।** जब पहले गाड़ी चलाना सीखते है तो कितनी मुश्किल लगती है, फिर धीरे-धीरे सहज, हाथ भी छोड़ देते है। पहले दिन मेडिकल कॉलेज में जाते हैं, ऑपरेशन थियेटर में घुसता है कोई नया, वो देखकर ही चक्कर खाकर एक दो तो गिर जाते हैं। वो पकड़ने का काम है खाली, असिस्टेंट| करना नहीं है, खाली पकड़ कर रखना है, देखते-देखते ही सिर घूमने लगता है थोड़ी देर में, खून ही खून, खून ही खून, खून ही खून, चक्कर आने लगते हैं और धीरे-धीरे कुछ असर ही नहीं होता है, हैबिट। जो चीज एक बार शरीर ट्यून हो गया फिर अपने आप काम करता है। माइंड एक बार ट्यून हो गया, अपने आप काम करता है, फिर कुछ नहीं करना पड़ता है। **एक बार प्रोग्राम बन गया, प्रोग्राम बन गया है दो बजे उठना है, फिर चाहे कितने भी बजे सोओ, अपने आप ही वो उठेगा। क्योंकि प्रोग्रामिंग ऐसी की है, पर वो प्रोग्रामिंग जो है उसके लिये टाइम लगता है, वो सहज हो जाये।** तो बारहवीं प्वाइंट, सहज। इसमें माया को भी बताया, माया भी आ जाये तो क्या समझो? खेल, सहज, ये खेल हो रहा है। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूं, ये खेल चालू है।

तो ऐसी कितनी निशानियां बताई बाबा ने आज? बारह। पहली -नशा, दूसरी -विजय, तीसरी -नो डाउट, चौथी -नो क्वेश्चन, पांचवी -बेफिक्र बादशाह, छठवीं -बलिहार, सातवीं -निश्चित, निश्चित, निश्चय, आठवी -मैं नशे में तो दूसरे भी नशे में, नौवीं -निमित्त, निर्मान, निर्माण, दसवीं -भाषा, निश्चयबुद्धि आत्माओं की भाषा, उदारता की भाषा, ग्यारहवां -तूफानों में स्वयं को चेक करना, तूफान आये तब फाउण्डेशन हिलता है, झाड़ उखड़ता नहीं है, हिलता है। यहां भी हिलते हैं, हिलना अर्थात प्रालब्ध हिलना जन्म-जन्म की। बारहवीं निशानी - सहज स्वतः समीप रत्न।

ऐसे समीप रत्न आत्माओं को, ऐसे निश्चयबुद्धि आत्माओं को, ऐसे बड़े ठेकेदारों को, छोटे-मोटे ठेकेदार नहीं, बड़े-बड़े ठेकेदारों को, ऐसे गृहस्थ में पवित्रता का व्रत धारण करने वाली आत्माओं को, ऐसे व्यर्थ से मुक्त आत्माओं को, ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं को, समर्थ आत्माओं को, ऐसे अपने रुहानी नशे से दूसरों को नशे में लाने वाली आत्माओं को, ऐसे सदा विजयी आत्माओं को, ऐसे क्वेश्चन मार्क मुक्त, ऐसे डाऊट मुक्त आत्माओं को, ऐसे सदा समर्थ बाप की समर्थ संतान आत्माओं को, ऐसे सर्वश त्यागी सर्वश समर्पित, बाबा ने कहा फिर कभी सुनायेंगे और विस्तार से, कब सुनाते देखते हैं, ऐसे चैलेंज करने वाली आत्माओं को, ऐसे माया के तूफानों को खेल समझने वाली आत्माओं को, ऐसे?

हो गये क्या बारह प्वाइंट?

ऐसे बेफिक्र बादशाहों को, ऐसे निश्चित विजयी आत्माओं को, ऐसे उदारचित्त आत्माओं को, ऐसे कल्याण की भाषा समझने वाली आत्माओं को, ऐसे संतुष्टता की भाषा जानने वाली आत्माओं को, ऐसे अचल-अडोल आत्माओं को, लीकेज को स्टॉप करने वाली आत्माओं को, ऐसे एकरस स्थिति वाली आत्माओं को, ऐसे निश्चयबुद्धि विजयी आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार, गुडनाईट और नमस्ते।

हम रुहानी बच्चों की रुहानी बापदादा को याद-प्यार, गुडनाईट और नमस्ते।

ओम शान्ति